रात्रिक्लास 13-6-68 ओमशान्ति बाप और वरसा याद है?

ऐसा शोभनीक सतसंग कहां होगा। और फिर पवित्रता का भी है। यह है नई दुनिया के लिए ज्ञान। और तो कोई देगा ही नहीं। क्योंकि कहते हैं कलियुग पुरानी दुनिया में अजन्म 40हजार वर्ष पड़े हैं। भगवान तो आवेगा ही पुरानी दुनिया में। नहीं तो भगवान क्या आकर को बुलाते भी हैं हम पतित बने हैं आओ। कब से पतित बने हैं यह तुम जानते हो। बच्चों को समझाना है यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। वह तो सृष्टि के रचयिता बिगर कोई जानते ही नहीं। वह रचयिता बाप ही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का नालेज देते हैं। 84 का चक्र कैसे फिरता है कैसे मनुष्य वृद्धि को पाते हैं। सृष्टि की आयु में बहुत थोड़ी अन्त में फिर बहुत हो जाते हैं। बाप रचयिता और यह है रचना। बाप कौन है। सृष्टि का चक्र कैसे चलता है इसको जानने से चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। घर में भी मित्र सम्बन्धी आद होते हैं। तो समझा सकते हो। जो जानते हैं, समझते हैं इन से बहुतों का कल्याण होगा तो वह सिद्ध सर्विस करते हैं। बच्चे भी सर्विस करते हैं। दिल में यह तो है मैं जो जानता हूं यह भी जान जावें। विश्व का मालिक बन जावें। विश्व के मालिक यह देवी देवतायें ही थे। वैज तो पड़ा हुआ है। बहुत संस्थायें हैं जिनकी कुछ न कुछ निशानी होती है। तुम्हारे यह है देवता कुल की निशानी। मनुष्य से देवता कैसे बनते हैं वह भी बच्चों को समझाना है। पूज्य देवतायें जो थे वह पूजारी कैसे बने फिर पूज्य कैसे बनते हैं यह कहानी है। जो कुछ समझते ही नहीं हैं वह क्या करेंगे। किस का कल्याण कर न सके। स्त्री अच्छी तो पुरुष भूटू। कहां पुरुष अच्छा है तो स्त्री भूटू। तुम अपना नाम बताओ तो भी वन्डर खावेंगे। बाप ने ही ऐसे ही वन्डर फुल नाम रखे। निराकार भगवान नाम कैसे रखेंगे। साकार सिवाय तो रख न सके। तो कैसे रखा। तुम से पूछता हूं। शिव बाबा ने तुम्हारा नाम कैसे रखा। (संदेशी पुत्री द्वारा) संदेशपुत्री को किसने दिया? (शिव बाबा ने सम्पूर्ण ब्रह्मा द्वारा दिया) प्रदर्शनी आद में तो आते ढेर ही हैं परन्तु यह तो बच्चे समझते हैं इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। तुमको प्रजा चाहिए ना। पाई पैसे की प्रजा चाहिए ना। यह है दुःखधाम। वह सुखधाम। वहां थोड़े मनुष्य और एक राज्य होगा। जो मनुष्य एकता चाहते हैं परन्तु समझते नहीं हैं। वन राज्य था तब तो शान्ति थी। यह किसको पता नहीं है। अभी तुम समझाते हो। कल्प पहले न जाना होगा तो नहीं जानेंगे। विनाश में खत्म हो जावेंगे। तुम जानते हो हम मृत्युलोक से अमरलोक में ट्रान्सफर होते हैं। यह पढ़ाई है ही भविष्य नई दुनिया के लिए। सो तो सिवाय बाप के और कोई पढ़ा न सके। किसको पता ही नहीं। यह पुरुषोत्तम संगम युगी है। तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां की जहां सेन्टर्स हैं तुम कहो हम पढ़ते ही हैं भविष्य के लिए। वह हमारा बाप टीचर गुरु भी है। ऐसा मनुष्य कोई हो न सके। कैसे बाबा, कैसे गुरु, कैसे टीचर है बताना होता है ना। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। बहुत अच्छी रीत युक्तियां निकाल के समझाना होता है। बच्चे तो यह समझते हैं याद की यात्रा सिवाय बेड़ा पार हो न सके। राजधानी में हाईएस्ट लोएस्ट तक सभी पद=पद होते हैं। बच्चे समझते हैं हम ट्रान्सफर होंगे तो ऊंच जरूर होंगे। जो समझते हैं वह पद न समझते हैं तो नम्बरवार पद पावेंगे। अभी तुम समझदार अकलमन्द बनते हो। रावण के थप्पड़ से बिल्कुल नीच बन गये हैं। यह है तमोप्रधान दुनिया। वर्थनाट अ पैनी। क्योंकि यह सभी भस्म हो जावेंगे। कुछ भी न रहे। वह थोड़े ही समझते हैं कि यह हाल होगा। तुम जानते हो। वेदों आद में कोई भी शास्त्र है नहीं जिसमें रचयिता और रचना की आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो। एक भी नहीं। यह वेद-शास्त्र आद सभी हैं भक्ति मार्ग के। जो पुनर्जन्म को पा लिया है। अभी बाप कहते हैं अपने को आत्मा मुझे याद करो। तुम पार्टधारी हो ना। यह भी बाप समझाते हैं आत्मा कैसे शरीर में आती है। पार्ट बजाती है। कितना छोटा सा राकेट है। अर्थात कितना तीखा है। सेकण्ड में जाकर पहुंचता है। आत्मा क्या है एक भी मनुष्य नहीं जानते। भल वेद-शास्त्र आद पढ़ा हो। परन्तु जानते कुछ भी नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।